International Journal of Applied and Universal Research E- ISSN No: 2395-0269
Volume IV, Issue IV, July-August 2017 Available online at: www.ijaur.com

मानव जीवन में चित्रकूट की प्रासंगिकता

'डॉ0 कुसुम सिंह (सह प्राध्यापक)
''शकुन्तला प्रजापति (शोध छात्रा, हिन्दी)
हिन्दी विभाग, म0गाँ0चि0ग्रा0वि0वि0, चित्रकूट, सतना (म0प्र0)

सारांश–
चित्रकूट प्राचीन काल से ही हिन्दुओं की आस्था का केन्द्र रहा है, क्योंकि भगवान श्रीराम लक्ष्मण एवं सीता माता सहित 14 वर्ष के वनवास में से साढ़े 11 वर्ष वही पर बिताए हैं। हिन्दुओं की आस्था की धुनी मर्यादा पुरुषोत्तम राम के इर्द गिर्द ही घूमती है, और ऐसे में उस स्थान का महत्व अपने आप ही अद्वितीय हो जाता है, जहाँ पर आस्था पुरुष साढ़े 11 वर्ष बिताए हों । संसार में सभी जीव अनुकूल स्थानों पर ही रहना पसंद करते हैं। चाहे वे छोटा हो या बड़ा, पशु हो या मानव, जन्तु हो या पौधे सभी के जीवनयापन हेतु अनुकूल वातावरण का होना अनिवार्य है। अब चूंकि अनेक ग्रन्थों से इस बात की पुष्टि होती है कि श्रीराम जी अपने वनवास का अधिका''ा समय चित्रकूट में ही बिताते हैं, इससे यह सिद्ध होता है कि वहाँ का वातावरण अत्यंत शुद्ध एवं मानव जीवन हेतु सर्वथा उचित रहा होगा। प्राचीन काल में वातावरणीय शुद्धता, स्थानीय सुन्दरता, खाद्य सामग्री एवं पीने हेतु निर्मल जल की उपलब्धता सर्वाधिक आवश्यक था। चित्रकूट में कादमगिरि पर्वत की चोटियां घनघोर वनों से सजी हुई थी, यहाँ अनेक प्रकार के कंदमूल, फल, भोजन के अथाह भण्डार थे। मंदाकिनी का निर्मल प्रवाह, आकर्षक वन गुफाएँ एवं कंदराएं चित्रकूट की मनोहर तपोभूमि की सुन्दरता में चार–चांद लगाने वाले थे और इन सबके बीच श्री रामचन्द्र जी का लंबे समय तक वहाँ रहना समस्त मानव जाति के समक्ष प्रकृति के महत्व को रेखांकित करता है। यही कारण है कि विज्ञान के इस युग में केवल भारत ही नहीं सम्पूर्ण वि''व प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण हेतु अनेक कार्यक्रम चला रहे हैं, जिससे जलवायु परिवर्तन के दुष्प्रभाव को कम किया जा सके और मानव जीवन की अगली पीढ़ी को चौतरफा सुरक्षित किया जा सके।
चित्रकूट धरा की प्राकृतिक संपदा को ध्यान में रखकर महर्षि वाल्मीकि ने वनवास के समय में श्री रामचन्द्र भगवान को चित्रकूट में निवास करने का परामर्श दिया था–

''चित्रकूट गिरि करहुँ निवासू। तहँ तुम्हार सब भाँति सुपासू।।
सैलु सुहावन कानन चारू। करि हेहरि मृग बिहग बिहारू।।''[1]

चित्रकूट की जलवायु एवं प्राकृतिक सौंदर्य की वजह से श्री राम, लक्ष्मण एवं सीता सहित लम्बी अवधि तक यहाँ रूक पाए। जिसका वर्णन वाल्मीकि कृत रामायण में इस प्रकार है। भगवान स्वयं कहते हैं कि चित्रकूट में वास करने के कारण उन्हें वनवास में जरा भी कष्ट नहीं हुआ। इस स्थान का प्राकृतिक सौंदर्य एवं धार्मिक आस्था मानव जीवन में उच्च आद''ाों को स्थापित करने की प्रेरणा देता है।

प्रस्तावना–
चित्रकूट उ.प्र. में बांदा जिले की कर्वी तहसील में तथा म.प्र. में सतना जिले की मझगवाँ तहसील के संगम स्थल पर स्थित है। यह एक मनोरम शान्ति और सुन्दर प्राकृतिक स्थल है। चित्रकूट चारों ओर से विन्ध्य पर्वतमाला और अरण्यों से घिरा हुआ अत्यन्त रमणीय स्थान है। यहाँ मन्दाकनी नदी के किनारे बने अनेक घाट और मन्दिरों में वर्ष भर श्रद्धालुओं का आवागमन होता रहता है। यह मान्यता है कि श्री राम ने सीता एवं अपने अनुज लक्ष्मण के साथ वनवास के चौदह वर्ष में से अधिकांश समय यही पर व्यतीत किया था, जिससे इस स्थान का आध्यात्मिक महत्व बढ़ जाता है। यहीं पर ऋषि अत्रि और सती अनुसूइया ने ध्यान लगाया था। चित्रकूट ही वह स्थान है। जहॉ ब्रह्मा, विष्णु और महेश ने सती अनुसूइया के यहाँ जन्म लिया था। यह माना जाता है कि अनेक रंग की धातुओं से सुसज्जित होने के कारण ही इस पहाड़ को चित्रकूट कहते हैं।

चित्रकूट की पहाड़ी पर बाँके सिद्ध, देवांगना, हनुमानधारा, सीता रसोई और सती अनुसूइया आश्रम आदि पुण्य स्थान हैं। दक्षिण पश्चिम क्षेत्र में गुप्त गोदावारी नामक सरिता एक गहरी गुफा से निकलती है। सीतापुरी पयस्विनी नदी के तट पर सुन्दर स्थान है और वहीं स्थित है, जहॉ राम–सीता की पर्णकुटी थी। इसे पुरी भी कहते हैं। पूर्व में इस स्थान का नाम जयसिंह पुर था और यहाँ कोलों का निवास था।

चित्रकूट के पास कामदगिरि है। इसकी परिक्रमा पथ 03 मील की है। कामता से 06 मील पश्चिमोत्तर में भरतकूप है। तुलसी रामायण के अनुसार इस कूप में भरत ने सब तीर्थों का वह जल डाल दिया था, जो श्रीराम के अभिषेक के लिए लाये थे।

महाभारत में चित्रकूट और मंदाकिनी का तीर्थ रूप में वर्णन किया गया है–

''चित्रकूट जनस्थाने तथा मंदाकिनी जले
विगाह्य निराहारो राजलक्ष्म्या निषेव्यते।''[2]

कालिदास ने रघुवंश में चित्रकूट का वर्णन किया है–

''चित्रकूटवनस्थं च कथित स्वर्गतिर्गुरोः लक्ष्म्या
निमन्त्रयां चके तमनुच्छिष्ट संपदा

धारास्वनोन्दारिदरी मुरवाऽसौ श्रृंगाग्रलग्नाम्बुदवप्रयंकः,
बध्नाति मे बंधुरगात्रि चक्षुदृष्टः ककुद्यानिवचित्रकूटः''[3]

जैन साहित्य में भी चित्रकूट का वर्णन है। भगवती टीका – ''चित्रकूट को ''चित्रकुड'' के नाम से वर्णित किया गया है।''[4] बौद्ध ग्रंथ ललित विस्तार – ''चित्रकूट की पहाड़ी का उल्लेख है।''[5]

महाकवि तुलसीदास ने रामचरितमानस में चित्रकूट का वर्णन अत्यन्त रमणीय एवं सुन्दर स्थान के रूप में किया है। जो पहाड़ों, झरनों एवं वन सम्पदा से सुसज्जित है।

चित्रकूट का वर्णन अनेक ग्रंथों में आध्यात्मिक स्थल के रूप में किया है। जो वर्तमान में भी हिन्दू धर्म की आस्था का केन्द्र होने के साथ ही एक महत्वपूर्ण पर्यटन स्थल है। यहाँ वर्ष भर पर्यटक आते–जाते रहते हैं, जो इस स्थान की सुन्दरता एवं आस्था को प्रमाणित करता है।

चित्रकूट का प्राकृतिक सौन्दर्य–

चित्रकूट की प्राकृतिक सुन्दरता अद्वितीय है। इस स्थान पर पहाड़ों की लम्बी श्रृंखला घने वन, झरना एवं मंदाकिनी नदी का अविरल प्रवाह साधु संतों को अपनी ओर आकर्षित करते हैं। विचित्रताओं से भरपूर इस क्षेत्र में मंदाकिनी का कल–कल करता निर्मल जल प्रवाह तथा उन्मुक्त यौवन बिखेरती विन्ध्य पर्वत श्रृंखला की पहाड़ियाँ किसी का भी मन मोह लेती हैं। यह मनोरम स्थल देश ही नहीं बल्कि विदेशी पर्यटकों को भी यहाँ आने को विवश कर देता है।

सती अनुसूइया का आश्रम, विशालकाय पर्वत के पीछे मंदाकिनी का शान्त प्रवाह एवं नाचते हुए मोरों का झुण्ड चित्त को अनायास ही हर लेते हैं। ''प्राकृतिक सुषमा से भरपूर हनुमान धारा, देवांगना तथा कोट तीर्थ सुरम्य दर्शनीय स्थल है। गुप्त गोदावरी में विशाल पर्वत मालाओं के नीचे मीलों अन्दर पोल है तथा बहुत ही सुन्दर प्राकृतिक रेखांकन है। अन्दर जलप्रपात में राम, लक्ष्मण व सीता के स्नानकुण्ड है।''[6]

वर्तमान परिवेश में जहाँ मनुष्य प्राकृतिक संसाधनों का अत्यधिक दोहन कर अपने भौतिक विकास में जुटा है। वहीं विभिन्न ग्रंथों में वर्णित चित्रकूट का प्रकृतिक सौन्दर्य एवं सम्पन्नता मनुष्य जाति के लिए पर्यावरण एवं प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण का संदेश देता है। चित्रकूट धाम की ओर मनुष्यों का स्वाभाविक आकर्षण की प्रमुख वजह भी उसकी प्राकृतिक सुन्दरता का अत्यधिक महत्व है। यहॉ उपलब्ध प्राकृतिक संपदा समान्य जनमानस का प्रकृति के प्रति नैतिक कर्तव्यों की याद दिलाता है तथा उन्हे पौध–रोपण, जल–संरक्षण तथा अन्ततः जलवायु संरक्षण के लिए प्रेरित करता है।

चित्रकूट का धार्मिक महत्वः–

चित्रकूट एक प्राचीन धर्मास्थल है। जिसका प्रमाण विभिन्न ग्रंथों में भी मिलता है। यह प्राचीन काल से ही ऋषि मुनियों की तपो भूमि रहा है। श्रीराम ने वनवास के समय पर अधिकांश भाग इसी स्थान पर बिताया था, जिससे इस स्थल का धार्मिक महत्व और भी बढ़ जाता है। धार्मिक मान्यताओं के अनुसार कामदगिरी पर्वत जहाँ श्रीराम ने निवास किया था। की परिक्रमा करने मात्र का फल मनुष्यों को जन्म–जन्मान्तर तक मिलता रहता है तथा उनके समस्त पापों का नाश हो जाता है। जानकी कुण्ड जहॉ जगत् जननी माता सीता प्रतिदिन स्नान कर पूजा–पाठ करती थीं। उसके जल के स्पर्श मात्र से ही समस्त रोग द्वेश दूर हो जाते है। पवित्र मंदाकिनी को गंगा के समतुल्य माना गया है। जिसमें स्नान से समस्त पापों का नाश हो जाता है। जो केवल तन ही नही मन को भी निर्मल कर देती है, और मनुष्य श्रेष्ठता को धारण करता है। चित्रकूट में दीपावली एवं रामनवमी के दौरान मेला लगता है, जिसमें लाखों श्रृद्धालु मंदाकिनी में स्नान एवं दीपदान कर धर्मलाभ प्राप्त करते है। चित्रकूट धाम के संबंध में गोस्वामी तुलसीदास कहते है कि जो भी मनुष्य चित्रकूट की पावन धरा में रहकर, मंदाकिनी में स्नान एवं जल ग्रहण कर श्रीराम भगवान का स्मरण करता है। वह भवसागर से पार उतर जाता है और उसे सहज ही मोक्ष की प्राप्ति हो जाती है।

वर्तमान युग आधुनिकता का दौर कम आधुनिकता की दौड़ ज्यादा लगता है। मनुष्य हर समय भौतिकता के पीछे भागता नजर आता है। जिसकी वजह से मनुष्य जाति के बीच तरह–तरह के मतभेद उभर कर सामने आते रहते है, ऐसे में चित्रकूट में पहुॅचने मात्र से ही व्यक्ति में धार्मिक भावना का संचार हो जाता है एवं मानव जाति के प्रति प्रेम का मार्ग प्रशस्त होता है, जो वर्तमान परिवेश में मनुष्यों हेतु अत्यन्त आवश्यक है। इस प्रकार चित्रकूट के धार्मिक स्थल मनुष्य को आत्मिक संबल प्रदान करते हैं।

ग्रंथों में चित्रकूटः–

महाकवि कालिदास ने अपने 'मेघदूतम्' एवं 'रघुवंश' महाकाव्य दो ग्रंथों में चित्रकूट का वर्णन किया है। मेघदूतम् में कर्त्तव्य से विमुख होने के कारण कुबेर द्वारा यक्ष को निर्वासित किया जाता है, जो रामगिरि में आश्रय लेता है। जहाँ पर मेघों की अत्यधिक वर्षा से यक्ष का मन व्याकुल हो जाता है और वह मेघों को ही अपना दूत बनाकर अपनी पत्नी के लिए संदेश भेजता है और कहता है कि वह रामगिरि में कुशलतापूर्वक निवास कर रहा है और वह तुम्हारी कुशलता जानना चाहता है–

''बूया एवं तब सहचरो रामगिर्याश्रमस्थ।
अब्यापन्नः कुशलतम्बले पुच्छतित्वाम् वियुक्तः।।''[7]

कालिदास के रामगिरि को चित्रकूट होने पर मतभेद है। किन्तु अधिकांश विद्वान रामगिरि को चित्रकूट ही मानते है।

कालिदास के रघुवंश महाकाव्य के अनुसार–''भगवान श्रीराम आयोध्या से निकल कर चित्रकूट पहुॅचते हैं और अनुसूइया आश्रम जाते है तथा आगे चलकर विराध का वध करते हैं।

तत्पश्चात् पंचवटी के लिए प्रस्थान करते हैं।''[8] महाकाव्य रघुवंश में चित्रकूट का वर्णन करते हुए कविवर कालिदास बताते हैं कि चित्रकूट सघन छायादार वृक्षों वाला स्थान था, जो अनेको प्रकार के कंदमूल तथा फलों से भरा हुआ था। चित्रकूट की कंदराओं में निर्मल जल प्रवाहित हुआ करता था। मंदाकिनी का जल अत्यन्त निर्मल था तथा वातावरण में पूर्णतः शुद्धता व्याप्त थी। जिसकी झलक आज भी चित्रकूट में मौजूद है–

''धारास्वनोदगारि दरीमुखाऽसौ श्रृंगाग्रलग्नाम्बुदवप्रपंकः।
बध्नाति मे बंधुरगात्रि चक्षुर्द्वप्तः ककुद्मानिव चित्रकूटः।।
एषा प्रसन्नस्तिमितप्रवाहा सरिद्विदूरान्तरभावतन्वी।
म्दाकिनी भाति नगोपकण्ठे मुक्तावली कण्ठगतेवभूमेः।।''[9]

कविवर जयदेव ने अपने नाटक 'प्रसन्नराघव' में चित्रकूट के वनान्चल को अनगिनत मोरों तथा अनेक प्रकार की लताओं से सुसज्जित बताया है–

''प्राप्ताः शिखण्डिशतखण्डित शाखिखण्ड।
मेते वयं शिखरिणं ननु चित्रकूटम्।।''[10]

मुरारी कवि ने अपने ग्रंथ 'अनर्घराघव' में चित्रकूट का वर्णन किया है। जिसमें बताया गया है कि श्रीराम भगवान द्वारा आर्य संस्कृति का संदेश आदिवासियों तक पहुँचाया गया था।

कवि राजशेखर ने बालरामायण में चित्रकूट का वर्णन करते हुए लिखा है कि चित्रकूट पर्वत अनेक धातुओं से सुसज्जित था। लक्ष्मण द्वारा बनाई गई पर्णशाला में श्रीराम कथा प्रसंगों को सुनते एवं कीर्तन करते हुए चित्रकूट में निवास करते थे–

''नानाधातु विचित्रं चित्रकूटाचलं गताः।
तत्रैव वेदीं निर्माय चिरकालं वसतिं चकार।।''[11]

इनके अतिरिक्त भट्टि काव्य, हनुमान नाटक तथा अध्यात्म रामायण में चित्रकूट का वर्णन मिलता है, जो चित्रकूट की प्राकृतिक सुन्दरता एवं भाुद्धता को प्रमाणित तथा मानव जीवन में उनके महत्व को रेखाकिंत करते हैं।

चित्रकूट प्रसंग में जीवन मूल्य–

रामचरितमानस में वर्णित चित्रकूट प्रसंग में जीवन मूल्य के संबंध में अनेक मील के पत्थर स्थापित हुए हैं जिनका अनुकरण वर्तमान समय की महती आवश्यकता है। आधुनिक परिवेश में जीवनमूल्यों में आई गिरावट को ध्यान में रखें तो रामचरितमानस का चित्रकूट प्रसंग जीवनमूल्यों में प्राण भर देने वाला साबित होगा।

महाकवि तुलसीदास चित्रकूट का वर्णन करते हुए लिखते हैं कि भरत समाज सहित राम को मनाने जाते हैं। वे कहते हैं कि यह राज्य श्रीराम का है और श्रीराम का ही रहेगा। यहाँ भरत जी द्वारा त्याग का अनुपम उदाहरण प्रस्तुत किया गया है। लक्ष्मण का क्रोध राम के प्रति विश्वास एवं भक्ति का भाव दर्शाता है। श्रीराम–भरत का मिलाप भातृ–प्रेम एवं सदाचार की सम्पूर्ण मिशाल पेश करता है। श्रीरामचन्द्र जी ने माता कैकेई को यह कह कर दोशमुक्त कर दिया कि जो कुछ भी होता है, वह सब ईश्वर की इच्छा से होता है। इसमें किसी का दोश नहीं है–

''आजु राम सेवक जसु लेऊँ। भरतहि समर सिखावन देऊँ।।
राम निरादर कर फलु पाई। सोवहुँ समर सेज दोउ भाई।।''[12]
''भरतहिं होइ न राजमदु बिधि हरि हर पद पाइ।
कबहुँ कि काँजी सीकरनि छीर सिंधु बिनसाइ।।''[13]
''भेंटी रघुबर मातु सब करि प्रबोधु परितोशु।
अम्ब ईस आधीन जगु काहुन देइअ दोशु।।''[14]

चित्रकूट के वर्णन में तुलसीदास जी ने त्याग, भक्ति, प्रेम एवं सदाचार सहित सम्पूर्ण जीवन मूल्यों को समाहित किया है– जो धर्म की धुरी के समान है तथा तीनों लोकों का कल्याण करने वाला है। इस प्रसंग से सम्पूर्ण मानव जाति को शिक्षा लेने की आवश्यकता है। इन उच्च आदर्शो को जीवन में स्थापित कर मनुष्य स्वयं ही देवरूप में ही विलीन होकर समाज के कल्याण में अपना योगदान दे सकता है। तुलसीदास ने समाज एवं परिवार में नैतिक मूल्यों की स्थापना तथा जीवन मूल्यों की ओर सबका ध्यान केन्द्रित करने के उद्देश्य से रामचरितमानस मे चित्रकूट प्रसंग का अद्वितीय वर्णन किया है। वे ऐसे समाज को स्थापित करना चाहते थे, जहाँ सम्पूर्ण मानव जाति सुखी हो प्रत्येक मनुष्य की मंसा समाज के लिए कल्याण कारी हो।

उपसंहार–

इस शोधपत्र में चित्रकूट के विभिन्न पहलुओं एवं संदर्भित ग्रंथों का मंथन करने से यह बात उभर कर आती है कि चित्रकूट प्राचीन काल से ही पावन तीर्थ एवं ऋषिमुनियों की तपो भूमि रहा है– जो चित्रकूट की प्राकृतिक सम्पदा सुन्दरता एवं जलवायुवीय शुद्धता को प्रमाणित करता है। जिस तरह चित्रकूट प्राचीन काल में तपस्वियों को आकर्षित करता रहा है। उसी तरह का आकर्षण आज भी यहाँ विद्यमान है। जिसकी वजह से लाखों श्रृद्धालुओं का वर्ष भर आवागमन बना रहता है। चित्रकूट का वैभव भविष्य में भी साहित्यकारों, विचारकों और समान्य जनमानस को अपनी ओर आकर्षित करता रहेगा। यह स्थल धार्मिक एवं पर्यटक महत्व को सदैव ही धारण करने वाला होगा। चित्रकूट धाम अपने में ऐतिहासिक एवं धार्मिक प्रसंगों के माध्यम से वर्तमान मानव जीवन में उच्च आदर्शों एवं जीवनमूल्यों को जीवन्त बनाये रखने में अत्यन्त ही महत्वपूर्ण सिद्ध होगा। यह स्थल मानव जाति को प्रकृति के प्रति प्रेम एवं अपने कर्तव्यों के निर्वहन का मार्ग प्रशस्त करता रहेगा, जो वर्तमान के साथ ही भविष्य में भी मानव जाति के लिए कल्याणकारी होगा। वास्तव में चित्रकूट प्राकृतिक भाषा में राष्ट्रीय एवं सांस्कृतिक एकता का संदेश तथा आध्यात्मिक सुख देने वाला पावन तीर्थ है।

संदर्भः–

1. श्री रामचरितमानस – 2.131–2
2. अनुशासन पर्व, 25
3. रघुवंश, 12
4. भगवती टीका, 7
5. ललित विस्तार, पृष्ठ 391
6. डॉ. विभा सिंह, राम का शरण स्थल चित्रकूट धाम, पर्यटन, अभिव्यक्ति, अक्टूबर 12 2009,
7. उत्तरमेघदूतम्, 43
8. रघुवंश, 12.15–24
9. रघुवंश, 13.47–48
10. प्रसन्नराघव, 7.78
11. बालरामायण, 39
12. श्री रामचरितमानस, 2.229–2
13. श्री रामचरितमानस, 2.231
14. श्री रामचरितमानस, 2.244